विश्वसुन्दरी के प्रति

सुन्दरि ! तेरे चल अंचल मे
युग-युग का मधुमास छुपा है !
तेरे आँगन की मिट्टी ही
बनती बीज उगाती अंकुर
जड़-चेतन की जड़ता-चेतनना
में भरती अविकल कल सुर
सुर भी ऐसा जो स्वर सप्तक
तक ही नहीं नियन्त्रित रहकर
दिग्दिगन्त की मर्म-ग्रन्थि को
चरमाकुल कर अभिमन्त्रित कर
बँध जाता है निज सीमा में
जो असीम है मुक्ति-प्राप्त-सा
अंकुर-अंकुर में चिर नूतन स्रष्टा
बन कर नाश छुपा है !

कृष्णजीवन भट्ट